"मार्क्सवादी समीक्षा और डॉ रामविलास शर्मा"

(हिन्दी प्रतिष्ठा 3) प्रो.रौशन कुमार (हिन्दी विभिन्न विभाग)

जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल

मार्क्सवादी समीक्षा का तात्पर्य उस समीक्षा से है जिसमें 'मार्क्स' के सिद्धांतों को केंद्र में रखकर साहित्य की समीक्षा की जाती है ।हिंदी में प्रगतिवाद का प्रारंभ सन 1936 से हुआ तब से ही मार्क्सवादी समीक्षा का प्रारंभ हिंदी में माना जा सकता है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज में दो वर्ग हैं --शोषक और शोषित। पूंजीपति पूंजी के बल पर श्रमिकों के श्रम का शोषण करता है अतः समाज में वर्ग संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। मार्क्सवादी समीक्षा में वर्ग संघर्ष सामाजिक समरसता, समाज उत्थान ,शोषितों के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखा गया है। मार्क्सवादी समीक्षकों को प्रगतिवादी आलोचक भी कहा जाता है। हिंदी के मार्क्सवादी समीक्षकों में प्रमुख है शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचंद्र गुप्त ,डॉक्टर रामविलास शर्मा, अमृत राय ,डॉ नामवर सिंह। मार्क्सवादी आलोचको में रामविलास शर्मा की दृष्टि सबसे अधिक पैनी ,स्वच्छ, और विश्लेषणात्मक है। साहित्यकार के लिए यह आवश्यक मानते हैं कि उसे वर्ग भेद पर आधारित समाज की पहचान हो। बैचारिक स्तर पर रामविलास जी कहीं भी समझौतावादी नहीं है

।वे कहते हैं "पार्टीजन साहित्यकार बनकर ही हम ऐसे साहित्य का निर्माण कर सकेंगे जो अगली पीढ़ियों के लिए मूल्यवान हो।" रामविलास शर्मा की आलोचनात्मक कृतियों में प्रमुख है प्रगति और परंपरा ,प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं ,आस्था और सौंदर्य ,आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, निराला की साहित्य साधना ,भाषा और समाज ,आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना, मार्क्सवाद और प्राचीन साहित्य का मूल्यांकन ,इनमें से उनकी आलोचना का केंद्र बिंदु यदि किसी एक को माना जाए तो वह है आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना इसमें उन्होंने शुक्ल जी को लोक हृदय में लीन होने की कसौटी पर जोर देते हुए उनके अन्तर विरोध को भी उजागर किया है। कहीं-कहीं रामविलास जी की समीक्षा में वर्ग संघर्ष एवं वर्गवाद आवश्यकता से अधिक महत्व पाकर उनकी समीक्षा शैली को विकृत कर देता है। उदाहरण के लिए सूरदास के पदों का संबंध उन्होंनेजुलाहों एवं किसानों की मुक्ति की आकांक्षा से जोड़ने का प्रयास किया है ।जो नितांत विकृत मानसिकता का परिचय देता है ।रामविलास शर्मा जी अपने प्रारंभिक आलोचना ग्रंथ में जो आक्रोश साहस और अवसरवादिता दिखाई है वह परवर्ती काल में लिखे गए ग्रंथों में दिखाई नहीं पड़ती।इनमें संयम ,संतुलन, एवं विवेक की तीक्ष्णता है। डॉ शर्मा की समीक्षा मार्क्सवाद के संकुचित दायरे में आबद्ध होकर बंधन मे कसमसाती हुई विचारधारा जैसी प्रतीत होती है। उसमें विचारात्मक संघर्ष वर्ग संघर्ष की अभिव्यक्ति प्रमुखता से हुई है। निराला की साहित्य साधना में उन्होंने निराला की काव्यसर्जना , रचना प्रक्रिया, भाषा एवं उनके व्यक्तित्व, के समग्र पहलुओं को उजागर किया और कवि के रूप में उन्होंने प्रतिष्ठित

कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। भाषा के प्रति अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए हुए लिखते हैं---' भाषा एक हथियार है जिससे हम प्रतिगामी की शक्ति पर प्रहार कर सकते हैं। क्रांति के लिए आवश्यक है अपने शत्रु प्रतिगामी शक्तियों को पहचानना।' समाज परिवर्तन में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका को मार्क्स ने पहचाना था। हिंदी में निराला जी ने भाषा के बंधन को तोड़ा और प्रगतिशीलता कि ओर अग्रसर हुए। तुलसी के काव्य में भी हुए सामंत विरोधी मूल्य खोज करते हुए इस महाकवि को शोषितों के साथ जुड़ा हुआ बताते हैं। डॉ रामविलास शर्मा हिन्दी के उन आलोचकों में से हैं जो मार्क्सवादी चिंतन के प्रकाश स्तंभ है। उनकी आलोचना में यत्र तत्र आक्रमण में मुद्दा है। क्योंकि जो उनके विचारों के प्रतिकूल है उस पर निर्मम प्रहार करने में हुए चूकते नहीं ।उन्होंने अपने समीक्षात्मक कृतियों द्वारा प्रगतिशील एवं प्रतिक्रियावादी तत्वों को पहचानने की जो दृष्टि प्रदान की, वह हिंदी की मार्क्सवादी समीक्षा को उसके द्वारा उनके द्वारा दिया गया सबसे बड़ा योगदान माना जा सकता है।